द्वितीय अंश

पहला अध्याय

श्रीमैत्रेय उवाच

भगवन्सम्यगाख्यातं ममैतदखिलं त्वया। जगतः सर्गसम्बन्धि यत्पृष्टोऽसि गुरो मया ॥१॥
योऽयमंशो जगत्सृष्टिसम्बन्धो गदितस्त्वया। तत्राहं श्रोतुमिच्छामि भूयोऽपि मुनिसत्तम ॥२॥
प्रियव्रतोत्तानपादौ सुतौ स्वयम्भुवस्य यौ। तयोरुत्तानपादस्य ध्रुवः पुत्रस्त्वयोदितः ॥३॥
प्रियव्रतस्य नैवोक्ता भवता द्विज सन्ततिः। तामहं श्रोतुमिच्छामि प्रसन्नो वक्तुमर्हसि ॥४॥

श्रीपराशर उवाच

कर्दमस्यात्मजां कन्यामुपयेमे प्रियव्रतः। सम्राट् कुक्षिश्च तत्कन्ये दशपुत्रास्तथाऽपरे ॥५॥
महाप्रज्ञा महावीर्या विनीता दयिता पितुः। प्रियव्रतसुताः ख्यातास्तेषां नामानि मे शृणु ॥६॥
आग्नीध्रश्चाग्निबाहुश्च वपुष्मान्द्युतिमांस्तथा। मेधा मेधातिथिर्भव्यःसवन पुत्र एव च ॥७॥
ज्योतिष्मान्दशमस्तेषां सत्यनामा सुतोऽभवत्। प्रियव्रतस्य पुत्रास्ते प्रख्याता बलवीर्यतः ॥८॥
मेधाग्निबाहुपुत्रास्तु त्रयो योगपरायणाः। जातिस्मरा महाभागा न राज्याय मनो दधुः ॥९॥
निर्मलाः सर्वकालन्तु समस्तार्थेषु वै मुने। चक्रुः क्रियां यथान्यायमफलाकांक्षिणो हि ते॥१०॥
प्रियव्रतो ददौ तेषां सप्तानां मुनिसत्तम। सप्तद्वीपानि मैत्रेय विभज्य सुमहात्मनाम्॥११॥

प्रियव्रत के वंश का वर्णन

श्रीमैत्रेय महर्षि ने कहा— हे आचार्य ! मैंने संसार की सृष्टि के विषय में जो आपसे पूछा था उसे आपने अच्छी तरह से बता दिया ॥१॥ आपने जगत् की सृष्टि सम्बन्धी जो यह प्रथम अंश बतलाया, हे मुनिश्रेष्ठ ! उसी के विषय में मैं पुनः जानना चाहता हूँ ॥२॥ आपने स्वायम्भुव मनु के दो पुत्रों को बतलाया, प्रियव्रत और उत्तानपाद उन दोनों में उत्तानपाद के पुत्र ध्रुव थे, उनके विषय में आपने बतलाया ॥३॥ हे द्विज ! आपने प्रियव्रत की सन्तान का वर्णन नहीं किया । मैं उसके विषय में सुनना चाहता हूँ; उसे आप प्रसन्न होकर सुनाएँ ॥४॥ **श्रीपराशर महर्षि ने कहा—** प्रियव्रत ने कर्दम प्रजापति की पुत्री से विवाह किया । उनकी दो पुत्रियाँ थीं, सम्राट् और कुक्षि और दश पुत्र हुए ॥५॥ प्रियव्रत के पुत्र, महाप्रज्ञ, महापराक्रमी, विनीत, पिता को प्रिय रूप से प्रख्यात थे अब आप उन सबों का नाम सुनें ॥६॥ आग्नीध्र, अग्निबाहु, वपुष्मान्, द्युतिमान्, मेधा, मेधातिथि, भव्य तथा भवन ये उनके पुत्र थे ॥७॥ उनमें दशवाँ पुत्र यथार्थ नाम वाले ज्योतिषमान् थे । प्रियव्रत के वे पुत्र बल एवं पराक्रम के लिए प्रख्यात थे ॥८॥ मेधा, अग्निबाहु तथा पुत्र ये तीन पुत्र योगी तथा अपने पूर्वजन्म की बातों को जानने वाले (जातिस्मर) थे; वे राज्य नहीं चाहते थे ॥९॥ हे मुने ! सर्वदा निर्मल चित्त वाले, सभी विषयों में समान बुद्धि वाले तथा कर्मों का फल नहीं

जम्बूद्वीपं महाभाग साग्नीध्राय ददौ पिता। मेधातिथेस्तथा प्रादात्प्लक्षद्वीपं तथापरम् ॥१२॥
शाल्मले च वपुष्मन्तं नरेन्द्रमभिषिक्तवान्। ज्योतिष्मन्तं कुशद्वीपे राजानं कृतवान्प्रभुः॥१३॥
द्युतिमन्तं च राजानं क्रौञ्चद्वीपे समादिशत्। शाकद्वीपेश्वरं चापि भव्यं चक्रे प्रियव्रतः।
पुष्कराधिपतिं चक्रे सवनं चपि स प्रभुः ॥१४॥
जम्बूद्वीपेश्वरो यस्तु आग्नीध्रो मुनिसत्तम ॥१५॥
तस्य पुत्रा बभूवुस्ते प्रजापतिसमा नव। नाभिः किम्पुरुषश्चैव हरिवर्ष इलावृतः॥१६॥
रम्यो हिरण्वान्षष्ठश्च कुरुर्भद्राश्व एव च। केतुमालस्तथैवान्यः साधुचेष्टोऽभवन्नृपः ॥१७॥
जम्बूद्वीपविभागांश्च तेषां विप्र निशामय। पित्रा दत्तं हिमाह्वं तु वर्षं नाभेस्तु दक्षिणम्॥१८॥
हेमकूटं तथा वर्षं ददौ किम्पुरुषाय सः। तृतीयं नैषधं वर्षं हरिवर्षाय दत्तवान्॥१९॥
इलावृताय प्रददौ मेरुर्यत्र तु मध्यमः। नीलाचलाश्रितं वर्षं रम्याय प्रददौ पिता ॥२०॥
श्वेतं तदुत्तरं वर्षं पित्रा दत्तं हिरण्वते ॥२१॥
यदुत्तरं श्रृङ्गवतो वर्षं तत्कुरवे ददौ। मेरोः पूर्वेण यद्वर्षं भद्राश्वाय प्रदत्तवान्॥२२॥
गन्धमादनवर्षं तु केतुमालाय दत्तवान्। इत्येतानि ददौ तेभ्यः पुत्रेभ्यः स नरेश्वरः॥२३॥
वर्षेष्वेतेषु तान्पुत्रानभिषिच्य स भूमिपः। शालग्रामं महापुण्यं मैत्रेय तपसे ययौ॥२४॥
यानि किम्पुरुषादीनि वर्षाण्यष्टौ महामुने। तेषां स्वाभाविकी सिद्धिः सुखप्राया ह्ययत्नतः ॥२५॥
विपर्ययो न तेष्वस्ति जरामृत्युभयं न च। धर्माधर्मौ न तेष्वास्तां नोत्तमाधममध्यमाः।
न तेष्वस्ति युगावस्था क्षेत्रष्वष्टसु सर्वदा ॥२६॥

चाहने वाले थे ॥१०॥ प्रियव्रत अवशिष्ट अपने सात पुत्रों मे सप्तद्वीपा पृथिवी को बाँट कर दे दिया ॥११॥ पिता ने आग्नीध्र को जम्बूद्वीप दे दिया। मेधातिथि को प्लक्षद्वीप प्रदान किया ॥१२॥ शाल्मलि द्वीप के राजा रूप से उन्होंने वपुष्मान् को अभिषिक्त किया। उन्होंने ज्योतिषमान् को कुश द्वीप का राजा बनाया ॥१३॥ महाराज ने क्रौञ्च द्वीप का राजा द्युतिमान को बनाया और शाकद्वीप का स्वामी उन्होंने भव्य को बनाया। पुष्कर द्वीप का अधिपति उन्होंने सवन को बनाया ॥१४॥ हे मुनि श्रेष्ठ ! जम्बूद्वीप के स्वामी आग्नीध्र थे। प्रजापति के समान उनके नव पुत्र हुए। नाभि, किम्पुरुष, हरिवर्ष, इलावृत, रम्य छठे हिरण्वान्, कुरु, भद्राश्व, तथा सत्कर्म करने वाले केतुमाल ॥१५-१७॥ हे विप्र ! अब जम्बूद्वीप का विभाग सुनो। पिता आग्नीध्र ने नाभि को दक्षिण दिशा के हिमवर्ष को दिया ॥१८॥ किम्पुरुष को उन्होंने हेमकूट नामक वर्ष प्रदान किया। तीसरे निषधवर्ष को उन्होंने हरिवर्ष को प्रदान किया ॥१९॥ इलावृत को उन्होने इलावृत वर्ष प्रदान किया जिसके बीच में सुमेरु पर्वत है। पिता ने रम्य नामक पुत्र को नीलाचल से सम्बद्ध वर्ष प्रदान किया ॥२०॥ हिरण्यवान् को पिता ने उत्तरवर्ती श्वेत वर्ष प्रदान किया। सुमेरु पर्वत के उत्तर वाले वर्ष को आग्नीध्र ने कुरु को प्रदान किया। सुमेरु के पूर्व वाले वर्ष को भद्राश्व को दिया ॥२१-२३॥ उन्होंने गन्धमादन वर्ष को अपने केतुमाल नामक पुत्र को प्रदान किया। इस तरह से पिता आग्नीध्र ने इन वर्षों को अपने पुत्रों को प्रदान कर दिया ॥२३॥ हे मैत्रेय ! अपने पुत्रों को इन वर्षों को प्रदान करके वे स्वयं तपस्या करने के लिए अत्यन्त पवित्र शालग्राम क्षेत्र में चले गये ॥२४॥ हे महामुने ! भारतवर्ष को छोड़कर अवशिष्ट जो आठ वर्ष हैं वहाँ स्वाभाविक रूप से सारी सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। और वे सुख बहुल वर्ष है ॥२५॥ उन वर्षों में कभी दुःख आदि नहीं होते हैं और न तो बुढ़ापा तथा मृत्यु आदि का भय ही होता है। उन वर्षों में धर्म, अधर्म, उत्तम, मध्यम आदि भी

हिमाह्वयं तु वै वर्षं नाभेरासीन्महात्मनः। तस्यर्षभोऽभवत्पुत्रो मेरुदेव्यां माहद्युतिः ॥२७॥
ऋषभाद्भरतो जज्ञे ज्येष्ठः पुत्रशतस्य सः। कृत्वा राज्यं स्वधर्मेण तथेष्ट्वा विविधान्मखान् ॥२८॥
अभिषिच्य सुतं वीरं भरतं पृथिवीपतिः। तपसे स महाभागः पुलहस्याश्रमं ययौ ॥२९॥
वानप्रस्थविधानेन तत्रापि कृतनिश्चयः। तपस्तेपे यथान्यायमियाज स महीपतिः ॥३०॥
तपसा कर्षितोऽत्यर्थं कृशो धमनिसन्ततः। नग्नो वीटां मुखे कृत्वा वीराध्वानं ततो गतः ॥३१॥
ततश्च भारतं वर्षमेतल्लोकेषु गीयते। भरताय यतः पित्रा दत्तं प्रातिष्ठता वनम् ॥३२॥
सुमतिर्भरतस्याभूत्पुत्रः परमधार्मिकः। कृत्वा सम्यग्ददौ तस्मै राज्यमिष्टमखः पिता ॥३३॥
पुत्रसङ्क्रामितश्रीस्तु भरतः स महीपतिः। योगाभ्यासरतः प्राणान्शालग्रामेऽत्यजन्मुने ॥३४॥
अजायत च विप्रोऽसौ योगिनां प्रवरे कुले। मैत्रेय तस्य चरितं कथयिष्यामि ते पुनः ॥३५॥
सुमतेस्तेजसस्तस्मादिन्द्रद्युम्नो व्यजायत। परमेष्ठी ततस्तस्मात्प्रतिहारस्तदन्वयः ॥३६॥
प्रतिहर्तेति विख्यात उत्पन्नस्तस्य चात्मजः। भवस्तस्मादथोद्गीथः प्रस्तावस्तत्सुतो विभुः ॥३७॥
पृथुस्ततस्ततो नक्तो नक्तस्यापि गयः सुतः। नरो गयस्य तनयस्तत्पुत्रोऽभूद्विराट् ततः ॥३८॥
तस्य पुत्रो महावीर्यो धीमांस्तस्मादजायत। महान्तस्तत्सुतश्चाभून्मनस्युस्तस्य चात्मजः ॥३९॥
त्वष्टा त्वष्टुश्च विरजो रजस्तस्याप्यभूत्सुतः। शतजिद्रजसस्तस्य जज्ञे पुत्रशतं मुने ॥४०॥
विष्वग्ज्योतिः प्रधानास्ते यैरिमा वर्द्धिताः प्रजाः। तैरिदं भारतं वर्षं नवभेदमलङ्कृतम् ॥४१॥
तेषां वंशप्रसूतैश्च भूक्तेयं भारती पुरा। कृतत्रेतादिसर्गेण युगाख्यामेकसप्ततिम् ॥४२॥

नहीं होते हैं। उन आठो वर्षों में कभी युग परिवर्तन भी नहीं होते हैं ॥२६॥ हिमनामक वर्ष के स्वामी नाभि थे। उनका अत्यन्त कान्ति सम्पन्न ऋषभ नामक पुत्र मेरुदेवी के गर्भ से पैदा हुआ ॥२७॥ ऋषभ के सौ पुत्रों में सबसे बड़े पुत्र भरत हुए। ऋषभ ने धर्मपूर्वक राज्य किया और अनेक यज्ञों को किया ॥२८॥ उसके बाद महाराज ऋषभ भरत को राज्य प्रदान करके तपस्या करने के लिए पुलहाश्रम चले गये ॥२९॥ वहाँ पर भी महाराज ऋषभ ने वानप्रस्थ विधि से तपस्या करते हुए सविधि यज्ञ किया ॥३०॥ तपस्या करने से उनका शरीर अत्यन्त कृश हो गया था। उनकी धमनियाँ दिखायी देने लगी थीं। अन्त में उन्होंने अपने मुख में एक पत्थर का टुकड़ा रखकर नग्नावस्था में शरीर त्याग किया ॥३१॥ चूकि पिता ऋषभ ने यहाँ का राज्य भरत को प्रदान किया था इसलिए इस वर्ष का नाम भारतवर्ष हुआ ॥३२॥ भरत के पुत्र सुमति हुए, वे अत्यन्त धार्मिक थे। पिता भरत ने राज्य करने के बाद यज्ञ करके सुमति को भारत वर्ष का राज्य प्रदान कर दिया। अपने पुत्र को राज्य सौपकर भरत महीपति योगाभ्यास में रत रहते हुए शालग्राम क्षेत्र में अपने प्राणों का परित्याग किए ॥३३-३४॥ उसके बाद वे योगियों के श्रेष्ठ वंश में ब्राह्मण रूप से जन्म लिए। हे मैत्रेय ! उनका चरित मैं तुमको बाद में सुनाऊँगा ॥३५॥ सुमति के वीर्य से इन्द्रद्युम्न का जन्म हुआ। उनके पुत्र परमेष्ठी हुए और परमेष्ठी के पुत्र प्रतिहार हुए ॥३६॥ प्रतिहार के पुत्र प्रतिहर्ता के नाम से विख्यात हुए। प्रतिहर्ता के पुत्र भव, भव के उद्गीथ और उद्गीथ के अत्यन्त सामर्थ्य सम्पन्न पुत्र प्रस्ताव हुए ॥३७॥ प्रस्ताव के पुत्र पृथु, पृथु के पुत्र नक्त और नक्त के पुत्र गय हुए, गय के पुत्र नर, नर के पुत्र विराट् हुए ॥३८॥ विराट् के पुत्र महावीर्य, महावीर्य के धीमान्, धीमान् के पुत्र महान्त और महान्त के पुत्र मनस्यु हुए ॥३९॥ मनस्यु के पुत्र त्वष्टा हुए, त्वष्टा के विरज, और उनके पुत्र रज हुए। रजस् के पुत्र शतजित् हुए और उनके सौ पुत्र हुए ॥४०॥ उनमें विष्वग्ज्योति प्रधान थे। उन सौ पुत्रों से यहाँ की प्रजा बहुत बढ़ गयी तो उन्होंने

एष स्वायम्भुवः सर्गो येनेदं पूरितं जगत् । वाराहे तु मुने कल्पे पूर्वमन्वन्तराधिपः ॥४३॥

इति श्रीविष्णुमहापुराणे द्वितीयेंशे प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

दूसरा अध्याय

श्रीमैत्रेय उवाच

कथितो भवता ब्रह्मन्सर्गः स्वायम्भुवश्च मे । श्रोतुमिच्छाम्यहं त्वत्तःसकलं मण्डलं भुवः ॥१॥
यावन्तः सागरा द्वीपास्तथा वर्षाणि पर्वताः । वनानि सरितः पुर्यो देवादीनां तथा मुने ॥२॥
यत्प्रमाणमिदं सर्वं यदाधारं यदात्मकम् । संस्थानमस्य च मुने यथावद्वक्तुमर्हसि ॥३॥

श्रीपराशर उवाच

मैत्रेय श्रूयतामेतत्संक्षेपाद्गदतो मम । नास्य वर्षशतेनापि वक्तुं शक्यो हि विस्तरः ॥४॥
जम्बूप्लक्षाह्वयौ द्वीपौ शाल्मलश्चापरो द्विज । कुशः क्रौञ्चस्तथा शाकः पुष्करश्चैव सप्तमः ॥५॥
एते द्वीपाः समुद्रैस्तु सप्त सप्तभिरावृताः । लवणेक्षुसुरासर्पिर्दधिदुग्धजलैः समम् ॥६॥
जम्बूद्वीपः समस्तानामेतेषां मध्यसंस्थितः । तस्यापि मेरुमैत्रेय मध्ये कनकपर्वतः ॥७॥
चतुरशीतिसाहस्रो योजनैरस्य चोच्छ्रयः ॥८॥

भारत वर्ष को नव भागों में विभक्त किया ॥४१॥ उन सबों की सन्तानों ने इस भारत वर्ष की पृथिवी का भोग सत्ययुग, त्रेतायुग इत्यादि के क्रम से इकहत्तर चौकड़ी तक भोगा ॥४२॥ यह स्वायम्भुव सृष्टि है जिसके द्वारा जगत् परिपूर्ण है । इस वाराह कल्प में ये ही सर्वप्रथम मन्वन्तराधिप थे ॥४३॥

इस तरह श्रीविष्णुमहापुराण के दूसरे अंश के प्रथम अध्याय का शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य) कृत हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण हुआ ॥२॥

भूगोल का वर्णन

श्रीमैत्रेय महर्षि ने कहा— हे ब्रह्मन् ! आपने मुझे स्वायम्भुव मनु की सृष्टि का वर्णन सुनाया । अब मैं आपसे पृथिवी के विस्तार का वर्णन सुनना चाहता हूँ ॥१॥ हे मुने ! जितने भी सागर, द्वीप, वर्ष, पर्वत, वन, नदियाँ तथा देवताओं आदि की पुरियाँ हैं, इस सम्पूर्ण वस्तुओं का जो प्रमाण है, उनके आधार तथा स्वरूप, एवं संस्थान का आप यथावत् वर्णन करें ॥३-४॥ **श्रीपराशर महर्षि ने कहा—** मैत्रेय ! सुनो; इन सारी बातों का वर्णन मैं संक्षेप में करता हूँ । विस्तार से तो इन सबों का वर्णन सौ वर्षों में भी नहीं किया जा सकता है ॥४॥ द्वीप सात हैं, जम्बूद्वीप, प्लक्षद्वीप, शाल्मली द्वीप, कुश द्वीप, क्रौञ्च द्वीप, शाक द्वीप और सातवाँ पुष्कर द्वीप ॥५॥ ये सातों द्वीप अपने समान परिमाण वाले सात समुद्रों से घिरे हैं । वे क्रमशः लवण (क्षार) समुद्र, इक्षुरस समुद्र, सुरा समुद्र, सर्पि (धृत) समुद्र, दधि समुद्र, दुग्ध (क्षीर) समुद्र तथा शुद्ध जल समुद्र ॥६॥ इस सातों द्वीपों के बीच में जम्बूद्वीप है । हे मैत्रेय ! इस द्वीप के बीच में सुवर्ण का सुमेरु पर्वत है ॥७॥ उस पर्वत की ऊँचाई चौरासी हजार योजन है, और नीचे वह सोलह हजार योजन पृथिवी में गड़ा है । इसके ऊपरी शिखर का विस्तार बतीस हजार योजन है । मूल में